

|                            |    |    |                          |    |    |
|----------------------------|----|----|--------------------------|----|----|
| प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्      | 5  | 9  | भवान्भीष्मश्च कर्णश्च    | 1  | 8  |
| प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च   | 18 | 30 | भवाप्ययौ हि भूतानाम्     | 11 | 2  |
| प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च   | 16 | 7  | भीष्मद्रोणप्रमुखतः       | 1  | 25 |
| प्रशान्तमनसं ह्येनम्       | 6  | 27 | भूतग्रामः स एवायम्       | 8  | 19 |
| प्रशान्तात्मा विगतभीः      | 6  | 14 | भूमिरापोऽनलो वायुः       | 7  | 4  |
| प्रसादे सर्वदुःखानाम्      | 2  | 65 | भूय एव महाबाहो           | 10 | 1  |
| प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां | 10 | 30 | भोक्तारं यज्ञतपसाम्      | 5  | 29 |
| प्राप्य पुण्यकृतां लोकान्  | 6  | 41 | भोगैश्वर्यं प्रसक्तानाम् | 2  | 44 |

## व

|                            |    |    |
|----------------------------|----|----|
| बन्धुरात्मात्मनस्तस्य      | 6  | 6  |
| बलं बलवतां अस्मि           | 7  | 11 |
| बहिरन्तश्च भूतानाम्        | 13 | 15 |
| बहूनां जन्मनामन्ते         | 7  | 19 |
| बहूनि मे व्यतीतानि         | 4  | 5  |
| बाह्यदर्शेष्वसत्कात्मा     | 5  | 21 |
| बीजं मां सर्वभूतानाम्      | 7  | 10 |
| बुद्धियुक्तो जहातीह        | 2  | 50 |
| बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः       | 10 | 4  |
| बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव     | 18 | 29 |
| बुद्ध्या विशुद्ध्या युक्तो | 18 | 51 |
| बृहत्साम तथा साम्नाम्      | 10 | 35 |
| ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम्   | 14 | 27 |
| ब्रह्मण्याधाय कर्माणि      | 5  | 10 |
| ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा    | 18 | 54 |
| ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः   | 4  | 24 |
| ब्रह्मणश्च त्रिविशाम्      | 18 | 41 |

## भ

|                        |    |    |
|------------------------|----|----|
| भक्त्या त्वनन्यया शक्य | 11 | 54 |
| भक्त्या मामभिजानाति    | 18 | 55 |
| भयाद्रणादुपरतम्        | 2  | 35 |

## म

|                         |    |    |
|-------------------------|----|----|
| मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि  | 18 | 58 |
| मच्चित्ता मद्गत प्राणाः | 10 | 9  |
| मत्कर्मकृन्मत्परमो      | 11 | 55 |
| मत्तः परतरं नान्यत्     | 7  | 7  |
| मदनुग्रहाय परमम्        | 11 | 1  |
| मनः प्रसादः सौम्यत्वम्  | 17 | 16 |
| मनुष्याणां सहस्रेषु     | 7  | 3  |
| मन्मना भव मद्भक्तो      | 9  | 34 |
| मन्मता भव मद्भक्तो      | 18 | 65 |
| मन्यसे यदि तच्छक्यम्    | 11 | 4  |
| मम योनिर्महद्ब्रह्म     | 14 | 3  |
| ममैवांशो जीवलोके        | 15 | 7  |
| मया ततमिदं सर्वम्       | 9  | 4  |
| मयाऽध्यक्षेण प्रकृतिः   | 9  | 10 |
| मया प्रसन्नेन तवाजुन    | 11 | 47 |
| मयि चानन्ययोगेन         | 13 | 10 |
| मयि सर्वाणि कर्माणि     | 3  | 30 |
| मय्यावेदय मनो मे माम्   | 12 | 2  |
| मय्यासक्तमनाः पार्थ     | 7  | 1  |
| मय्येव मन आधत्स्व       | 12 | 8  |
| महर्षयः सप्त पूर्वं     | 10 | 6  |
| महर्षीणां भृगुरहम्      | 10 | 25 |